सुर साधना

समाज में और प्रकृति के साथ सुर-ताल की साधना
ज्ञान मार्ग

अनियमित पत्रक **वाराणसी ज्ञान पंचायत की पहल** सीमित वितरण के लिए

वर्ष 1, अंक 3, नवम्बर 2022
सहयोग राशि रु. 10/-

साईं वही ज्ञानी है, जो जाणे पर पीड़

‘लोक’ और ‘लोकनीति’

लोक’ यानि वह दुनिया जो हमारे आस-पास है. धरती, आकाश, बादल, मौसम, नदी, पहाड़, पेड़-पौधे, प्राणी-जगत, मनुष्य-समाज सभी इसमें हैं.

मनुष्य-समाज की खुशहाली का आधार इस पूरे लोक की खुशहाली में है.

‘लोकनीति’ यानि जीने के ऐसे प्रकार जिनके माध्यम से इस लोक को सतत् सभी की खुशहाली की ओर ले जाया जा सके. यानि सहजीवन की ऐसी व्यवस्थाओं का विचार बनाना जिनमें दुःख, अन्याय, ज्यादती करने वाले कदमों को रोकने में समाज समर्थ बने.

अवधू, अंधाधुंध अँधियारा
सिच्छा के मठ बुड़ा रहे हैं
ये संसार हमारा.
अवधू , अस्पताल बन गए
अब लुटेरों के टीलें
ठगी डेरा डाल बैठी
राजनीति की गलियों में.
गज़ब ये कि फिर भी,
ये ही कहलाते हैं ज्ञानी !
अवधू, अंधाधुंध अँधियारा

<u>सम्पादकीय</u> :
वाराणसी नगर का ‘स्वभाव’

वाराणसी के नागरिक होने के क्या अर्थ हैं? वाराणसी के सभी स्त्री -पुरुष मिलकर इस नगर के ‘स्वभाव’ को गढ़ते हैं. नगर का यह ‘स्वभाव’ यहाँ की विरासत, जीवनमूल्य, व्यवहार और संबंधों में व्यक्त होता है. इस भूमि की संत परंपरा कहती है कि ‘स्वभाव’ के दर्शन पाने के लिए विद्वत्ता उतनी नहीं बल्कि पर-पीड़ा की गहराइयों में उतर पाने की क्षमता अधिक सहायक होती है.

नगर निगम के कार्यों और नीतियों में वाराणसी के स्वभाव को समझने के क्या कोई विशेष प्रयास दिखाई देते हैं ? बात यह है कि जिस ज्ञान और विचार के आधार पर स्थानीय निकायों का निर्माण हुआ है, उनमें पीड़ा, स्नेह, भाईचारा, त्याग, जैसे भाव और मूल्यों को कोई स्थान नहीं है. विकास की पाखंडी अवधारणा, भेदभावपूर्ण नियमों की कवायद, खोखली चमक पाने की दौड़ में नगर के स्वभाव और नगरवासियों की सुविधाओं की बलि चढ़ा दी जाती है.

वाराणसी का फक्कड़पन अहंकारी या गैरजिम्मेदाराना नहीं है. शिव, उनका परिवार और गंगाजी का यहाँ स्थाई निवास सहजीवन की एक नैतिक सत्ता का सतत् अहसास देता है. यहाँ की संकरी गलियों ने इस नगर की काया को बुना है, जहाँ स्वायत्तता, भाईचारा और उदारता का रस-प्रवाह नित नवीन जीवन, दर्शन और विचार के दरवाजे खोलता है. यह दुनिया की एकमात्र जीवंत नगरी इसीलिए है कि यहाँ के सामान्य बाशिंदों ने इसे जीवंत बनाये रखा है. दूसरे शब्दों में कहें तो शासकों की कृपा से नहीं बल्कि यहाँ के बाशिंदों के जीवनमूल्य, कार्य और ज्ञान के प्रकारों में वह शक्ति निहित है, जो वाराणसी का ‘स्वभाव’ बनाती है और इसे जीवंत बनाये रखती है. आज प्रमुख सवाल यही है कि नगर निगम की व्यवस्थाओं में यह कैसे खिलकर आयें?

ज्ञान आन्दोलन

गाँव-गाँव में घाट-घाट पर,
जंगल बस्ती हर पनघट पर,
मेला हाट और बाट-बाट पर,
पग-पग पर हैं विविध ज्ञानधर.

यहीं से अलख जगाना है, कौन है ज्ञानी ?
ज्ञान कहाँ कहाँ ? फैसला यह करवाना है.

लोकनीति-संवाद

वाराणसी ज्ञान पंचायत की पहल

वाराणसी ज्ञान पंचायत की पहल पर 11 अक्तूबर 2022 से वाराणसी शहर में लोकनीति-संवाद चलाया जा रहा है. वाराणसी नगर निगम के चुनाव नवम्बर-दिसंबर में होने जा रहे हैं, इस मौके पर यह संवाद चलाना प्रासंगिक मालूम हुआ. प्रत्येक गुरुवार और रविवार को क्रमश: राजघाट और अस्सीघाट पर लोकविद्या सत्संग के साथ यह संवाद चलाया जाता है. संवाद की अब तक दस कड़ियाँ हो चुकी हैं. हर कड़ी में दो-तीन वक्ता आमंत्रित किये जाते रहे हैं.

लोकनीति : लोकनीति के मायने प्रकृति के साथ तालमेल में जीवन गढ़ने के प्रकारों में हैं. इसी में जीवन और समाज के नैतिक उत्थान और विकास का रास्ता है. लोकनीति में सम्पूर्ण लोक के खुशहाली की नीतियाँ निहित है जबकि राजनीति मात्र कुछ ही लोगों के स्वार्थ की सेवा करती रही है. ऐसे में लोकनीति को मज़बूत करना आवश्यक है. लोकनीति के बल पर ही राजनीति को मर्यादित करने के रास्ते खुलते हैं. सामान्य लोगों के पास ज्ञान होता है और इनके ही जीवन में समकालीन नैतिक मूल्य भी पलते हैं. इन्हीं के बल पर लोकनीति को गढ़ा जा सकता है.

लोकनीति-संवाद का उद्देश्य : समाज में ज्ञान की उन विविध धाराओं को, जो लोकहित में हैं, जीवंत हैं, नैतिक शक्तियों को बल प्रदान करती हैं, उन्हें पहचानना और समाज के बीच लाना इस संवाद का उद्देश्य है. इस दिशा में अभी तक आठ कड़ियों में जिन विषयों पर संवाद हुए हैं, उनमें प्रमुख हैं--- लोकनीति बनाम राजनीति, स्थानीय निकायों की नगर और नागरिकों के प्रति ज़िम्मेदारी, लोकविद्या और लोकनीति के बीच अन्योन्याश्रित रिश्ता, नगर विकास और व्यवस्थाओं में विविध ज्ञान-धाराओं के समावेश का आग्रह, नगर की नैतिक विरासत और दर्शन, गाँव-शहर के बीच सम्बन्ध, नगर का धार्मिक-सामाजिक-आर्थिक ताना-बाना, जैसे विषयों की वैचारिकी के प्रकाश में नगर का पर्यावरण, गंगाजी और घाटों की स्वछता और रखरखाव, मल्लाहों और नाविकों के विस्थापन का सवाल, नगर में ऑटो चालकों की परेशानियाँ, सीवर और कूड़े का निस्तारण आदि जैसे दैनिक जीवन की महत्वपूर्ण समस्याओं के प्रति सभासद की जिम्मेदारियों पर संवाद को गति मिली.

वक्ता : कारीगर नजरिया की प्रेमलता सिंह, भारतीय किसान यूनियन के नगर अध्यक्ष कृष्ण कुमार क्रांति, राजघाट के नाविक दुर्गा प्रसाद सहनी, ऑटो चालक यूनियन के अध्यक्ष ज़ुबेर खान, पर्यावरण रखरखाव स्वयंसेवी संगठन के रवि शेखर और एकता शेखर, दिल्ली विश्वविद्यालय के शोध छात्र पुनीत, वार्ड 63 के सभासद उम्मीदवार फ़ज़लुर्रहमान अंसारी, काशी हिन्दुविश्वविद्यालय के छात्र प्रत्यूष, 'गाँव के लोग' पत्रिका के संपादक रामजी सिंह, गाँधी विद्या संस्थान संकाय सदस्य और रजिस्ट्रार डॉ. मुनीज़ा खान, दर्शन अखाड़ा के संयोजक गोरखनाथ, सलारपुर से बौद्ध विचारक महेंद्र प्रताप मौर्य, छित्तनपुरा के बुनकर एहसान अली, अस्सी घाट के निषाद देशराज , माँ गंगाजी निषाद सेवा समिति के हरिश्चंद्र बिन्द, वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्त्ता अरुण कुमार, चंदवक के विद्या आश्रम के सदस्य विनोद कुमार, भारतीय किसान यूनियन के वाराणसी जिला अध्यक्ष लक्ष्मण प्रसाद, नाटीइमली के बुनकर मोहम्मद अहमद, रामनगर कालेज की अध्यापिका डॉ. चटर्जी, डॉ. पारमिता, वरिष्ठ पत्रकार सुरेश प्रताप सिंह प्रमुख रहे हैं. प्रत्येक संवाद में स्थानीय लोग शामिल होते रहे हैं.

वाराणसी ज्ञान पंचायत की ओर से चित्रा सहस्रबुद्धे और रामजनम ने सञ्चालन किया और लक्ष्मण प्रसाद, फ़ज़लुर्रहमान और हरिश्चंद्र बिन्द ने संवाद को स्थानीय समाजों के नज़रिये के साथ तराशा और निखारा. लोकनीति संवाद का क्रम आगे भी जारी रहेगा .

वाराणसी ज्ञान पंचायत

वाराणसी ज्ञान पंचायत यह वाराणसी के लोगों, स्त्री-पुरुषों का ज्ञान-मंच है. मान्यता यह है कि हर मनुष्य, स्त्री और पुरुष, ज्ञानी है. यह ज्ञान-पंचायत ज्ञान पर जन-सुनवाई का रूप भी है. इस पंचायत में पढ़े-लिखे और अनपढ़, प्रोफ़ेसर और सामान्य गृहिणी, कृषि वैज्ञानिक और किसान, टेक्सटाइल इंजीनियर और बुनकर, जल वैज्ञानिक और मल्लाह के ज्ञान में ऊँच-नीच नहीं की जाती और सभी के ज्ञान को बराबरी का दर्जा रहता है.

नगर निगम : स्थानीय प्रतिभाओं को मौका दें

फ़ज़लुर्रहमान अंसारी, बुनकर साझा मंच, वाराणसी

लोकतंत्र के लिए यह ज़रूरी है कि शासन-प्रशासन आदि व्यवस्थाओं में आम लोगों की राय, ज्ञान, हुनर की अधिक से अधिक भागीदारी बनाने के प्रयास हो. इसके लिए स्थानीय निकायों में स्थानीय मामलों का प्रबंधन हो स्थानीय लोगों द्वारा हो सके इसकी ज़िम्मेदारी नगर निगम की है. यह इस सिद्धांत पर आधारित है कि स्थानीय समस्याओं और ज़रूरतों की समझ केन्द्रीय या राज्य सरकारों की अपेक्षा स्थानीय लोगों/निवासियों को अधिक होती है। इसलिए नगर के सही और न्यायपूर्ण विकास के लिए निर्णय और नियोजन की प्रक्रिया भी नीचे से ऊपर की ओर होना चाहिए. जो काम स्थानीय स्तर पर किये जा सकते हैं, वे काम स्थानीय लोगों और उनके नुमाइंदों के हाथ में रहने चाहिए।

स्थानीय शासन के स्तर पर आम नागरिक को उसके जीवन से जुड़े मसलों, ज़रूरतों और उसके विकास के बारे में फ़ैसला लेने वाली प्रक्रियाओं को शामिल किया जा सकता है। स्थानीय संसाधनों पर स्थानीय समुदायों व संगठनों का पहला अधिकार हो. विकास कार्य के प्रति सामूहिक सोच को बढ़ावा मिले इसके तरीके बनाने चाहिए. नियोजन व क्रियान्वयन में पारदर्शिता व जवाबदेही इन्हीं रास्तों से बन पायेगी.

युवा प्रतिभाओं का पलायन रोककर व उनकी शक्ति, उर्जा एवं कला का रचनात्मक कार्यो में सदुपयोग हो ऐसे उद्यमों को प्राथमिकता देनी चाहिए.

लोकधर्म

वाराणसी में यूँ तो बारहों महीने पर्व और मेले लगते हैं लेकिन माघ, सावन, अश्विन और कार्तिक के महीनें पर्व और मेलों के महिने हैं. प्रकृति, समाज और जीवन के उज्वल पक्षों की बरकत के लिए मनाये जाने वाले पर्व माने जाते रहे हैं. लेकिन जिस तरह आज ये मनाये जाते हैं क्या वे लोकधर्म कहलाये जा सकते हैं?

लोकधर्म की भूमिका समाज को नैतिक पथ के दर्शन कराना है. परिस्थितियों के अनुसार लोकधर्म नये-नये रूप धारण करता रहता है और सतत् बंधनों से मुक्त होने का आवाहन करता है. इसमें आराध्य के प्रति आस्था प्रकट करने में मंदिर, मूर्ति, पुष्प, प्रसाद, मन्त्र, पुरोहित की दरकार नहीं होती और होती भी है तो बहुत मामूली सी. ज़रूरी तो 'समाज' द्वारा मिलकर इसे मनाने की है. एक तरह से ये पर्व साथ मिलकर संकल्प लेने के अवसर होते हैं. जीवन, प्रकृति और समाज के प्रति कर्तव्यों को पहचानने के पर्व हैं.

यह सही है कि महाराष्ट्र का गणेश उत्सव अथवा बंगाल का दुर्गा पूजा उत्सव की भूमिका को आज़ादी आन्दोलन के दौरान एक लोकधर्म का रूप मिला था, लेकिन क्या आज भी ये लोकधर्म कहे जा सकते हैं? इन्हीं की तरह छठ पर्व, करवा चौथ, जिऊतिया, नवीन वर्ष का आरम्भ, आदि पर्वों की परम्पराओं और इनसे सम्बंधित रीतिरिवाजों को भी लालच, स्वार्थ और दिखावे को पोसने वाले बाज़ार ने मात्र 'मनौती' का रूप दे दिया है, सामाजिक दायित्व का भाव घटता ही जा रहा है.

विमर्श करें

विविधा प्रिय प्रकृति, विविधा पूर्ण धरती
इनसे जन्मा मानव, एक रंग में क्यों रंगे?
एक धारा में काहे आगे बढे?
हम सोचें समझें , संवाद करें,
विमर्श करें, भीड़ का हिस्सा ना बनें
ना अपने लोगों को बननें दें.

---प्रेमलता चकियावी

'समर शेष है' से

फूलों के रंगीन लहर पर ओ उतरने वाले !
ओ रेशमी नगर के वासी ! ओ छवि के मतवाले!
सकल देश में हलाहल है, दिल्ली में हाला है
दिल्ली में रौशनी, शेष भारत में अंधियारा है
मखमल के पर्दों के बाहर, फूलों के उस पार
ज्यों का त्यों है खड़ा, आज भी मरघट का संसार .

---रामधारी सिंह 'दिनकर'

अनगढ़ और मनगढ़ : विचित्र पहेली

---पिछले अंक से जारी

मनगढ़ पहुंचे अनगढ़ के ठिये पर. अनगढ़ दरवाजे पर उकड़ूँ बैठे साग चुन रहे थे, साथ ही बुद्बुदा रहे थे. मनगढ़ आकर बगल में बैठ गए . सुनाई दिया कि सिवचरण को बुरा भला कह रहे हैं. सिवचरण सभासद हैं, और अभी अभी उनकी टोली मोहल्ले में सफाई की स्थिति देख कर गई है. मनगढ़ ने अपनी बात तुरंत अनगढ़ के सामने रख दी ---**गुरु, कहाँ ज्यादा पाखंड है ? राजनीति में या लोकधर्म में?**

अनगढ़ चुप रहे. साग बटोरकर गमछे में रख लिया फिर बोले "कहाँ से आवत हौवा ?" मनगढ़ ने बता दिया "लोकविद्या सत्संग से".

कुछ सोच कर अनगढ़ बोले "लोकधर्म का रूप विविध और बिखरा हुआ होता है, पहल लोगों के हाथ में होती है और लोक के प्रति श्रद्धा और निर्मलता की लहरों पर चढ़कर जन मानस ऊपर उठता है. किसी संगठित धर्म के बूते की बात नहीं है ये."

यह कहकर अनगढ़ घर के अन्दर गए और लौटे तो उनके हाथ में गुड़ की ढेली और जल था, देकर बोले---

"देखो, संगठन चाहे धर्म का हो चाहे अर्थ, विद्या, सत्ता, संसाधन अथवा मनोरंजन का हो; एक हद से अधिक होने पर हमेशा ही किसी अन्य उद्देश्य की सेवा में जाता है, जो बहुधा लोकहित में न होकर संकुचित हित में ही होता है. और यहीं तो हर पाखंड का घर बन जाता है. कबीर हों, रविदास हों, सभी ने यही तो कहा है."

"आज की राज्यसत्ता अधिकतम संगठन का नमूना है और राजनीति इसे बनाये रखने का साधन है."

फिर बोले "संगठन अधिक होगा तो पाखंड भी अधिक होगा ही ."

मनगढ़ के मन में सवाल उठा कि तो क्या संगठन करना ही जायज़ नहीं है?

अनगढ़ मुस्कुराने लगे बोले "कल आवा तो फुरसत से बैठल बतियावल जाई "

---अगले अंक में जारी

वाराणसी ज्ञान पंचायत के लिए लोकविद्या जन आन्दोलन, भारतीय किसान यूनियन, स्वराज अभियान, बुनकर साझा मंच, माँ गंगाजी निषादराज सेवा समिति द्वारा संयुक्तरूप से संयोजित. [संपर्क : चित्रा सहस्रबुद्धे (9838944822), लक्ष्मण प्रसाद (9026219913), रामजनम (8765619982), फ़ज़लुर्रहमान अंसारी (7905245553), हरिश्चंद्र बिन्द (9555744251)**] पता :** विद्या आश्रम, सा 10/82 अशोक मार्ग, सारनाथ, वाराणसी-221007

तकनीकी विकास

साइंस आधारित तकनीकी को अपनाने में ही 'विकास' मान लेना आज का सबसे बड़ा भरम है. छोटे-बड़े सभी कार्यों में साइंस आधारित तकनीकी का इस्तेमाल तबाही को न्यौता ही है. किसी भी कार्य के लिए सन्दर्भ, पैमाना, परिणाम और विकल्प का विचार किये बिना ही इस तकनीकी की भूमिका तय हो जाती है. बाज़ार (सोशल और तमाम प्रिंट मिडिया) नई-नई तकनीकी के विज्ञापनों से पटा रहता है. अक्ल सिखाने वाले संस्थान, पालिकाएं और प्रशासन इनकी वकालत करते नहीं थकते.

इस बारे में गौतम बुद्ध की एक कहानी से सीख लेना शायद मददगार हो.

गौतम बुद्ध अपने प्रिय शिष्य आनंद के साथ एक कक्ष में कुछ लोगों के बीच बैठे थे. दार्शनिक वार्ता हो रही थी सभी लोग बहुत ध्यान से सुन रहे थे और अपने सवालों को पेश कर संवाद कर रहे थे. एक सवाल पर बुद्ध कुछ देर के लिए सोचने लगे. अचानक उन्होंने आनन्द से कहा कि पानी ले आओ. पानी का घड़ा दूर और ऊँचाई पर था. सोच की निरंतरता और वार्ता में बाधा न हो यह सोचकर आनन्द ने बिना उठे सहजता से हाथ लम्बा कर बहुत दूर रखे घड़े से पानी ला कर दे दिया.

बुद्ध उग्र हो गए. बोले कि विद्या का यह अनैतिक इस्तेमाल है.

सामान्य जीवन में उपलब्ध साधनों के सहारे जिन कार्यों को किया जा सकता है, उनके लिए विशेष विद्यायें इस्तेमाल नहीं की जानी चाहिए. भीषण संकट, दुर्घटना अथवा ऐसे ही किसी महासंकट में इनका उपयोग किया जाना चाहिए .

साइंस आधारित तकनीकियों के बारे में भी आज यही दृष्टि अपनाने की जरूरत है वरना अनैतिकता का साम्राज्य बनेगा.

विद्या वही जो लोकहित साधे,

शिक्षा वही जो गैरबराबरी दूर करे,

श्रम वही जो इज्ज़त की रोटी दे.